४. मेघदूत का प्रकृति-चित्रण

यमाहुः सर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

—कालिदास

प्रकृति रचना है, विधाता की सृष्टि। इसमें स्वभावतः विशेषताएँ हैं। प्रत्येक रचित वस्तु का अपना स्वभाव है। इसलिए यह विशिष्ट रचना मानी जाती है। प्राकृतिक भिन्नताओं के कारण प्रत्येक रचना अपूर्ण है। अपूर्ण होने के कारण उसमें पूर्णता प्राप्त करने की स्वाभाविक इच्छा है। इसी इच्छा के माध्यम से व्यक्ति सहज रूप में अपने अधूरेपन को पूर्णता में बदल देना चाहता है। फलतः मानव मानवेतर सृष्टि के साथ मैत्री करता है, उसका सहारा लेता है और उसे आत्मीय समझता है। यही नहीं, सृष्टि में—प्रकृति में मनुष्य से लेकर तृण तक समाविष्ट है। चेतन और अचेतन दोनों संयुक्त हैं। दोनों साथ ही अभिव्यक्त होते हैं। इसलिए अचेतन जगत् मानव का सहोदर है, बन्धु है; सहचर है, उसके साहचर्य में ही मनुष्य दुःख-सुख का संवेदन करता है, जागता और सोता है। प्रकृति से वह प्रेम करता है। इसके बिना वह रह नहीं सकता। यह प्रेम घर-आँगन से लेकर प्रकृति के अनन्त विस्तार तक व्याप्त है। लौकिक जगत् से लेकर अलौकिक जगत् तक व्याप्त है।

'मेघदूत' में महाकवि कालिदास ने लौकिक प्रेम को अलौकिक रूप दिया है।.....'मेघदूत' में रसानुकूल शब्दों का प्रयोग तो किया ही है, साथ ही भाषा में ध्वन्यात्मक सौन्दर्य का समुचित समावेश भी किया है, जड़ प्रकृति की जंगम प्रकृति के साथ तुलना कर महाकवि ने उसे सजीवता और चित्रमयता प्रदान की है। इस दृष्टि से 'मेघदूत' की कवित्वमयी भाषा में एक सौम्य सांकेतिकता है। यही कारण है कि मेघदूत की कविताएँ महाकवि के भावुक हृदय की मर्मस्पर्शी वेदना का मधुरतम गान प्रतीत होती हैं। मेघदूत की उपर्युक्त विशेषताएँ..... कालिदास को 'छायावादी' कवियों की कोटि में सर्वोच्च स्थान प्रदान करती हैं। 'हमें यह कहने में तनिक भी हिचक नहीं होगी कि मेघदूत की कविताएँ ध्वनिमयी शैली में लिखी गई छायावादी कविताएँ हैं, जिनमें ध्वनिवक्रता के साथ छायावक्रता का अनुपम संयोग है। महाकवि कालिदास का मेघदूत-काव्य अभिव्यञ्जनावाद और छायावाद का चिरपुरातन और चिरनवीन, अतएव सर्वोत्तम, प्रतीक है और विश्व के समस्त प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य के लिए गौरव की वस्तु है।'

(रंजन सूरिदेव)

2026.02.07 10:08

मेघदूत में प्रकृति उद्दीपन के रूप में चित्रित हुई है और आलम्बन के रूप में भी। मेघदूत की रचना के पीछे एक विराट् प्राकृतिक पृष्ठाधार है; मेघदूत की काव्य-कला का मेरुदण्ड प्रकृति है। इसमें अनगिनत सरस और मनोरम प्रकृति-चित्र हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि कालिदास ने मेघदूत में, प्रकृति-सौन्दर्य में मानव की करुण अनुभूतियों के दर्शन किए हैं और साथ ही मानव की चिरसंचित वेदनाओं का प्रकृति की अनन्त छवि के बीच गुंफन किया है। अभिशप्त विरही यक्ष के सन्देश-वाहक बादल में कवि ने विश्व की चिरन्तन व्यथा का अश्रुपूर्ण इतिहास रच दिया है। शिवबालक राय के शब्दों में हर साल, हर आषाढ़ के पहले दिन, जब कभी कोई गिरि-शृंग मेघ से विचुम्बित होता रहेगा, तो हर सहृदय के गीले नयन में सूनी कलाईवाले उस विरही का चित्र अनायास खिंच आयेगा।

'मेघदूत' का प्रथम प्रकृति-चित्र है आषाढ़ का प्रारम्भ। काले-कजरारे बादल आ गये। बादल का टुकड़ा रामगिरि के शिखर से जुड़ गया। यक्ष को लगा कि बादल मिट्टी की ढूह से खेलता हुआ हाथी है। वर्षागम से वियोगी यक्ष सहन-शक्ति खो बैठता है। मेघ के आगे बड़ी मुश्किल से अपने को संयत कर वह सोचता है—वर्षा के प्रथम मेघ को देखकर प्रेममग्न दम्पतियों का भी हृदय उत्कण्ठा से भर जाता है तो दूरस्थ प्रिया की ग्रीवा के आलिंगन की अभिलाषावाले की मर्मव्यथा की क्या कथा! यहाँ कवि की वेदनाभूति की तीव्रता प्रकट होती है। बाँबी की चोटी से निकलनेवाले इन्द्रधनुष की छटा का प्रतिबिम्ब मेघ पर पड़ता है तो वह गोप-वेशधारी, मयूरपंख से युक्त श्रीकृष्ण के समान कान्तिमान हो जाता है—

रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ता-
द्वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनुः खण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते
बर्हेणेव स्फुरित रुचिना गोपवेषस्य विष्णोः ॥१।१५॥

मेघ अपना मार्ग भूल न जाय, इसलिए यक्ष उसे कुछ चिह्न बता रहा है। यक्ष मेघ से कहता है कि जल की बूँदें बरसाते हुए तुम्हारे जाने का जो मार्ग है, उसपर कहीं तो भौंरे अधखिले केसरोंवाले हरे-पीले कदम्बों को देखते हुए, कहीं हिरन कछारों में भुँई केलियों के प्रथम बार विकसित होनेवाली कलियों को टूँगते हुए, और कहीं हाथी जंगलों में धरती की उठती हुई उग्र गन्ध को सूँघते हुए मार्ग की सूचना देते मिलेंगे। वनप्रान्तर के बीच से गुजरनेवाले मेघ के लिए इससे बढ़कर और क्या चिह्न मिलेगा! कन्दली की कलियों को टूँगते हुए हरिण,

कदम्बों के अधखिले केसर पर मँडरानेवाले भौंरे और धरती की गन्ध सूँघते हुए हाथी—इनमें से एक पर भी नजर पड़ी, तो मेघ राह नहीं भूल सकता। धरती की उग्र गन्ध सूँघनेवाले हाथी का चित्र कितना प्राणवन्त है :

नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढै
राविर्भूत प्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्।
जग्धवारण्येष्वधिक सुरभि गन्धमाघ्राय चोर्व्याः
सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम् ॥१।२१॥

कालिदास ने जहाँ-कहीं किसी भौगोलिक स्थान का वर्णन किया है, वहाँ प्रायः पूरी वास्तविकता का परिचय दिया है। सुमेरु, अलका, गन्धमादन, औषधि-प्रस्थ, अमरावती आदि अति प्राकृतिक स्थानों के वर्णन में भले ही उसने कल्पना-विलास से काम लिया हो, लेकिन हिमालय, महेन्द्र, उत्कल, पाण्ड्य, केरल, सिन्धु, कम्बोज, कैलास आदि प्रान्तों के वर्णन में उसने भौगोलिक सत्यता का परिचय दिया है। 'मेघदूत' में दशार्ण, अवन्ति, माल, कनखल, कैलास आदि का वास्तविक चित्रण किया गया है। मेघ के मार्ग में मिलनेवाले पर्वत और नदियों के वर्णन में भी कहीं भौगोलिक त्रुटि नहीं हुई है। शिवशंकर राय के अनुसार कालिदास के प्राकृतिक चित्रण की मुख्य विशेषताएँ हैं—धरती और स्वर्ग दोनों की प्रकृति की वास्तविकता, चित्रण-कौशल के कारण अति प्राकृतिक दृश्य का भी प्राकृतिक प्रतीत होना, प्रकृति में सर्वत्र शिव का चिद्विलास होना, प्रकृति और मानव का एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील होना, प्रकृति पर रमणी का आरोप, आश्रम और तपोवन का चित्रण, प्रकृति की अप्रस्तुत योजना, तर्कसंगत प्रमाण के द्वारा चित्र की विश्वसनीयता और भौगोलिक सत्यता और दैशिक विशेषता का चित्रण।

कहीं-कहीं ऐसे स्थल हैं जहाँ प्रकृति का चित्रण आलम्बन के रूप में किया गया है। मेघदूत की प्रकृति विरही यक्ष की भावना से सर्वत्र अनुरंजित है। कामार्त्त यक्ष के हृदय में करुणार्द्र कवि का प्राण तरंगित होता रहता है। रामगिरि पर गेरू से प्रिया को चित्रित कर यक्ष अश्रुपात करता है और अलका में दुःखिनी यक्षिणी को देखकर मेघ आँसू बहाता है। आँसू और मुस्कान की बदली-चाँदनी से 'मेघदूत' की प्रकृति रोमांचित होती रहती है। इसका प्रत्येक बिन्दु यक्ष के मानस से प्रतिबिम्बित हो रहा है। जिस प्रकार गम्भीरा के चित्ररूपी निर्मल जल में मेघ के सहज-सुन्दर शरीर का प्रतिबिम्ब पड़ता है, उसी प्रकार यहाँ की प्रकृति-सुन्दरी के अन्तःकरण में यक्ष का मानस प्रतिच्छायित होता है। यक्ष की उद्दाम शृंगार-भावना का परिचय निर्बिन्ध्या और गम्भीरा नदियों के प्रसंग में उपलब्ध होता है। शिवजी के प्रति भक्ति-भावना का उच्छ्वसित उल्लेख कई स्थलों पर हुआ है।